Agriculture and Environment
The Citizen Face

26/11/2021

Lecture: 1

Host-Plant Resistance to Insects: Sustainable Crop Production

Dr H.C. SHARMA
Ex Vice Chancellor
Dr YS Parmar University of Horticulture & Forestry
Solan, Himanchal Pradesh

Lecture: 2

Water Security for India: A Reality Check

Dr D.M. HEGDE
Ex Director
ICAR-Indian Institute of Oilseed Research
Hyderabad, Telangana

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Organizer

Dr P. K. Rai
Director
ICAR-Directorate of Rapeseed-Mustard Research, Bharatpur (321303) Rajasthan

भाकृअनुप–सरसों अनुसंधान निदेशालय
सेवर, भरतपुर (राजस्थान)

कृषि एवं पर्यावरण विषय पर वैज्ञानिक संवाद

का आयोजन

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 26 नवम्बर को सरसों अनुसन्धान निदेशालय द्वारा **'कृषि एवं पर्यावरण'** विषय पर दो व्याख्यानों का आयोजन हाइब्रिड मोड में किया गया। इस दौरान डॉ वाई. एस. परमार औद्योगिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन के पूर्व कुलपति **डॉ एच. सी. शर्मा** ने कीट–रोधक प्रजातियों के बारे में चर्चा करते हुए कीट–प्रतिरोधी प्रजातियों के विकास पर प्रकाश डाला। डॉ शर्मा ने चना एवं बाजरा फसलों में लगने वाले कीटों के बारे में जानकारी देते हुए इन फसलों में कीट–प्रतिरोधी किस्मों के बारे में विस्तार से बात की। भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के पूर्व निदेशक **डॉ डी. एम. हेगडे** ने भारत में जल संसाधनों की उपलब्धता पर व्याख्यान देते हुए कृषि में सिचाईं एवं जल प्रबंधन के इतिहास के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया की लगातार प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता घटने के कारण वर्ष 2007 से ही भारत जल की कमी वाले देशों की सूची में शामिल है जो की हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए। डॉ हेगडे ने बताया कि सिचाईं की आधुनिक विधियों का प्रयोग कर हम उपलब्ध जल संसाधनों के अनुचित दोहन से बच सकते है। उन्होंने वर्षा जल के संचयन पर पर जोर देते हुए कहा कि जल की समस्या को सुलझाने के लिए ऐसे प्रयास तेजी से करने पड़ेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के प्राफेसर सुरिंदर सिंह बंगा ने की। उन्होंने बदलते पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए सरसों की उन्नत किस्मों के विकास के बारे में वैज्ञानिकों को सुझाव दिए। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ पी. के. राय ने किया। डॉ राय ने सरसों की फसल में सिचाईं की उन्नत तकनीकियों के बारे में जानकारी दी। संस्थान में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों ने प्रत्यक्ष रूप से एवं अन्य राज्यों के वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन माध्यम से इस कार्यक्रम में भाग लिया। आज ही के दिन संविधान दिवस के उपलक्ष में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया और संविधान का पालन करने की शपथ ली। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के वैज्ञानिक डॉ प्रशांत यादव ने किया।

Host Plant Resistance to Insects
For Sustainable Crop Production and Food Security
Hari C Sharma
Former Vice Chancellor - YSP University of Horticulture & Forestry, Nauni, Himachal Pradesh. Principal Scientist - ICRISAT, Patancheru Telangana, India. Email: hcsh19@gmail.com

Utilization of Groundwater

महानगर टाइम्स, जयपुर (27 /11 /2021)

कृषि एवं पर्यावरण विषय पर वैज्ञानिक संवाद हुआ सम्पन्न

महानगर संवाददाता

बयाना। सेवर स्थित सरसों अनुसंधान केंद्र में आजादी के अमृत महोत्सव पर कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा शुक्रवार को अपने विचार व्यक्त किये गए। जिसमें डॉ. वाईएस परमार औद्योगिकी एवं बांकी विश्वविद्यालय व सोलन के पूर्व कुलपति डॉ. एचसी शर्मा ने कीटरोधक प्रजातियों के बारे में चर्चा करते हुए उनके विकास पर प्रकाश डाला। डॉ. शर्मा ने चना एवं बाजरा फसलों में लगने वाले के कीटों के बारे में जानकारी देते हुए निस्तारण के बारे में विस्तार से चर्चा की। भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के डॉ. डीएम हेगड़े ने भारत में प्रति व्यक्ति जल की कमी के बारे में बताया कि यह एक चिंता का विषय है, इसलिए आधुनिक संसाधनों का उपयोग कर इस संकट से निबटा जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता लुधियाना के प्रोफेसर सुरिंदर सिंह बंगा ने की। उन्होंने वैज्ञानिकों को बदलते पर्यावरण के बारे में सुझाव दिये। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. पीके राय द्वारा किया गया था। इसके अलावा संविधान दिवस के उपलक्ष्य में सभी वैज्ञानिकों ने संविधान की प्रस्तावना का पाठ कर संविधान पालन करने की शपथ ली। संचालन डॉ प्रशान्त यादव ने किया।

राजस्थान पत्रिका, भरतपुर (27 /11 /2021)

कृषि और पर्यावरण पर वैज्ञानिकों ने एक दूसरे से साझा किए अनुभव

भरतपुर | आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत शुक्रवार को सरसों अनुसन्धान निदेशालय में कृषि एवं पर्यावरण विषय पर वैज्ञानिकों ने संवाद किया। इस मौके पर डॉ. वाई. एस. परमार औद्योगिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन के पूर्व कुलपति डॉ. एच. सी. शर्मा ने कीट-रोधक प्रजातियों के बारे में चर्चा करते हुए कीट-प्रतिरोधी प्रजातियों के विकास पर जोर दिया। उन्होंने चना एवं बाजरा फसलों में लगने वाले कीटों के बारे में जानकारी देते हुए इन फसलों में कीट-प्रतिरोधी किस्मों के बारे में बात की। भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के पूर्व निदेशक डॉ. डी.एम. हेगडे ने भारत में जल संसाधनों की उपलब्धता, कृषि में सिचाईं एवं जल प्रबंधन के इतिहास के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया जल की उपलब्धता घटने के कारण वर्ष 2007 से ही भारत जल की कमी वाले देशों की सूची में शामिल है जो चिंता जनक है। उन्होंने सिचाईं की आधुनिक विधियों का प्रयोग कर हम उपलब्ध जल संसाधनों के अनुचित दोहन से बच सकते है। उन्होंने वर्षा जल के संचयन पर पर जोर देते हुए कहा कि जल की समस्या को सुलझाने के लिए ऐसे प्रयास तेजी से करने पड़ेंगे।